eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

वर्तमान समय में कबीरदास की प्रासंगिकता

[1]डॉ0 विनय कुमार पटेल
[1]असि0 प्रोफेसर इतिहास, राजकीय महिला स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, बाँदा (उ0प्र0)

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

वर्तमान विश्व बहुत तेज गति से एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित हो रहा है। ऐसे समय में जब विश्व में भौतिकतावाद बढ़ने के साथ–साथ सामाजिक सदभाव और शांति में कमी आयी है एवं राष्ट्रों के बीच तनाव बढ़ा है, कबीरदास के सत्य सन्देश के प्रचार–प्रसार से ही विघटित मानव समाज को फिर से एक सूत्र में जोड़ा जा सकता है। आज की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को देखकर भले ही हमें यह लगता है कि, हम उत्तर कबीर युग में जी रहे हैं, लेकिन अगर हम कबीरदास के काव्य को सही से पढ़े तो यह स्पस्ट होता है कि, उसमें आज के समय और समाज के अनेक जटिल सामाजिक, सांस्कृतिक प्रश्नों के पहचान के संकेत हैं एवं उनके उत्तर की सम्भावनाएँ भी। समय बतला देगा कि, कबीरदास की कविता न तो नीरस ज्ञान है और न केवल साधुओं के तानपुरे की चीज। आलोचक कबीरदास की कविता को सामने रखकर उनके काव्य रत्नाकर से, थोड़े से रत्न पाने का प्रयत्न करे, चाहे वे जगमगाते हुए जीवन के सिद्धांत रत्न हो या अध्यात्मिक जीवन के झिलमिलाते हुए रत्न कण हो। अपने त्याग, तपस्या, समता, सदाचार और सद्भावना का वह संदेश भारतीय जनता के सम्मुख पेश किया, जिसमें जनहित की भावना निहित थी। कबीरदास का प्रत्येक संदेश किसी एक व्यक्ति, जाति, समाज, देश या वर्ग विशेष के लिए नहीं है। वह तो मानव मात्र के लिए है। कबीरदास का मानना था कि, असत्य का प्रकोप जितना बढ़ता है सत्य उतना ही प्रासंगिक हो जाता है। कबीरदास के पवित्र सत्य सन्देश की प्रासंगिकता हमेशा से थी, आज भी है, और आगे भी रहेगा, क्योंकि सत्य प्रत्येक युग में एक ही रहता है।

बीज शब्दः– कबीरदास, वर्तमान विश्व, प्रासंगिक, काव्य, सामाजिक, असमानता, जातिवाद।

Introduction

कबीरदास भक्त, कवि और समाज सुधारक तो थे ही, साथ ही साथ प्रखर वक्ता और क्रांतिकारी चिन्तक भी थे। समाज में व्याप्त अराजकता, अन्ध–विश्वासों, कुरीतियों, धार्मिक आडम्बरों के प्रति उनकी नकारात्मक प्रतिक्रिया सर्वविदित है। इनकी रचनाओं में झूठे पाखण्डों, और आचार व्यवहार के प्रति चोट वितृष्णा झलकती है। इनके विचार मानव मात्र के हित की बातों से भरे थे, किन्तु उस समाज में ऐसा कुछ नहीं था, जिनकी उन्होने कल्पना की थी। इस वजह से उनकी आलोचना में विरोध का घर मुखरित होता दिखायी देता है, हालांकि उनकी कड़वाहट किसी विकार की उपज न थी, बल्कि समय और परिस्थितियों की असंगति की देन थी, जिसके कारण उन्हें मर्मान्तक पीड़ा होती और आन्तरिक छोभ के कारण कटूक्तियाँ तक कहनी पड़ गयीं। वर्तमान में जाति–पाति, धर्म, समाज, सम्प्रदाय के नाम पर विखंडित मानव ने संसार को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा किया

©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

है। धर्म के नाम पर फल–फूल रहे अधर्म ने विश्व मानवता को कलंकित कर दिया है। मानव स्वार्थपरक होता जा रहा है और मानवता, भाईचारा, सहृदयता जैसे मानवीय गुणों को, जीवन–मूल्यों को भूलता जा रहा है। ऐसे समय में अन्य की अपेक्षा कबीरदास की प्रासंगिकता बढ़ जाती है।

वर्तमान समय में कबीरदास इतने प्रासंगिक क्यो हैं? इनके समय में, इनके पहले और इनके बाद में बहुत से संत कवि हुए थे। उन्होने उँच–नीच, जाति–पाति तथा माया को अवरोधक बताया। फिर भी क्या कारण है कि, कबीरदास उनके मध्य से निकलकर, सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध कैसे हो गए? रवीन्द्र नाथ टैगोर, अली सरदार जाफरी ने इनके पदों या शब्दों को अपनी भाषाओं में अनुवाद करना क्यों जरूरी समझा? इसके पीछे क्या कारण हो सकता है? इन सब बातो पर गम्भीरता पूर्वक चिंतन–मनन करने के बाद निम्नलिखित कारण परिलक्षित होता दिखायी देता है–

साहित्य के क्षेत्र में कबीरदास का अपने समकालिनों में कोई भी सानी नहीं। सामाजिक विसंगतियों व व्यवस्थाओं पर खुलकर चोट करना एवं अपनी बातों को बिना किसी अवरोध के कहना, ऐसा कोई दूसरा नहीं है। निरर्थक कर्मकाण्डों, पाखण्ड की ढपली बजाने वालों की खबर लेना और दो टूक अपनी बात कहने की हिम्मत कबीरदास के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं कह सकता था।[1] कबीरदास ने प्रत्येक प्रकार के रूढ़िवादी आचरण, वैचारिक अन्धता एवं तर्कहीन पद्धति के आगे ऐसे प्रश्न खड़े किए कि, जिनका उत्तर किसी के पास नहीं था। इस्लाम धर्म से भयभीत एवं आतंकित जनता ने कबीरदास के विचारों को ग्रहण कर अपने भीतर अत्मविश्वास का संचार किया एवं धर्म परिवर्तन में अवरोधक बने। कबीरदास के साहित्य में स्वतंत्र चिंतन को जो स्थान मिला, वह मध्यकालीन साहित्य की कालजयी निधि है एवं वर्तमान कालीन साहित्यकारों के लिए मार्गदर्शक भी। उन्होने समाज को वह स्वतंत्र विचारधारा प्रदान की जिसके आईने में समाज अपनी छवि को देख सके।

कबीरदास द्वारा विभिन्न भाषाओं के शब्दों का जितना सार्थक, काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है, उतना किसी भी समकालीन कवि ने नहीं किया है।[2] इनकी निर्मलता, निर्भयता, उदान्तता, मानवीय संवेदना सभी कुछ मिलकर उनके कथन को जो विविध अर्थ और अनुभूति की गहराई देते हैं, वह हिन्दी साहित्य की अद्वितीय धरोहर है। कबीरदास की कविताओं में लोक सम्बोधन है। वे कहीं संन्यासियों को सम्बोधित करते हैं तो कहीं अवधूत को, कहीं मुल्लाओं को तो कही दरवेश को, कहीं साधू को तो, कहीं माया को सम्बोधित करते हैं। ऐसा सम्बोधन हिन्दी साहित्य में नहीं मिलता है।[3]

मध्यकाल में हजारों संत हुए, लेकिन कबीरदास ऐसे कविध्संत हैं, जैसे पूर्णिमा का चॉद, अद्वितीय, अतुलनीय। जैसे अंधकार में कोई सहसा दीपक जला दिया हो। पूर्णता की प्राप्ति के लिए कबीरदास एक आमंत्रण है, एक आवाहन हैं। मानव जाति के इतिहास में कबीरदास के सूत्रों का कोई सानी नहीं है। सरल, सीधे, स्पष्टवादी कबीरदास के कथन हजारों शाष्त्रों का सार है[4]।

कबीरदास में सभी को अपनी वाणी के माध्यम से समेट लेने की अद्भुत क्षमता थी। इसी वजह से वे अकेले ही समस्त मृत परम्पराओं को नकार कर एक हॉथ में लुकाठी और दूसरे हॉथ

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

में प्रेम की कालजयी पताका लेकर प्रेम की अलख जगाते, सुसुप्त व्यक्ति को जगाते, सुसुप्तावस्था से जागृत होने वालों को सही राह पर लाते हुए बढ़ते गए[5]।

कबिरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हॉथ।
जो घर फेंके आपना, चले हमारे साथ।।

कबीरदास के वचन पूर्णतया मौलिकता पर आधारित है, यही कारण है कि, आज वे हिन्दुस्तान के प्रत्येक लोगों के सांस में बसे हैं और आम जन उन्हें अपने अत्यंत निकट पाते है। कबीरदास न तो चन्द आक्रामक लौकिक उक्तियों के प्रवक्ता हैं, न आत्म मुक्ति की खोज में किसी गुफा में अलख जगाने वाले सन्यासी हैं। एक ओर उनका अध्यात्म इस भीड़ भरी दुनिया के बीच बाजार से गुजरता है, तो वहीं दूसरी ओर यह दुनिया उनके आध्यात्मिक सत्य की जॉच से गुजर कर एक नयी जीवन दृष्टि प्राप्त करती है[6]।

वर्तमान समय समानता का युग है। कबीरदास सबसे पिछड़े, पीड़ित, दबे हुए लोगों को भी कुंठा से बाहर निकालकर उनके भीतर आत्मबल भरते हैं। कबीर का संदेश जड़ता को तोड़ने वाला है। आधुनिक समय के साहित्यकार कबीर की मानसिकता को अपने काव्य संवेदना के अत्यंत पास पाते हैं। रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, गजानंद माधव मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे आदि आधुनिक समय के विद्वानों ने कबीरदास से प्रेरणा लेकर उनका नाम सम्मानपूर्वक लिया है। अभी कुछ वर्ष पहले जर्मनी के हाइडिल बर्ग विश्वविद्यालय में दुनिया भर के विद्वानों ने एकत्रित होकर 21वीं सदी में कबीरदास की प्रासंगिकता की चर्चा की गयी। मैक्सिको के विद्वान डेविड लारनेन ने लैटिन अमेरिका के बुद्धिजीवियों पर कबीरदास के प्रभाव को स्वीकार किया। जर्मनी के विद्वान लोशर तुक्से ने तो कबीरदास के दोहों का जर्मन भाषा में अनुवाद किया। रूस की नेलिया मुकरोवा 30 वर्षों से कबीरवाणी पर शोध कर रहीं हैं तथा कबीरदास के पदों और दोहों का रूसी भाषा में अनुवाद किया जो आज रूस में काफी प्रसिद्ध है।

स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय की लिन्डाहेन्स ने स्पष्ट तौर पर कहा है, ''कि कबीर अब अकेले भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के हो गए हैं।'' कबीरदास की जो महिमा है कि, भारत रत्न डा0 भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद भी इन्हे न छोड़ सके। भीमराव अम्बेडकर के जीवनी लेखक श्री आंगने लाल जी ने लिखा है कि, ''भीमराव अम्बेडकर हॉथ में डण्डा लेकर 'चल कबीरा तेरा भवसागर में डेरा' भजन गुनगुनाते हुए अपनी मृत्यु के अंतिम छड़ में, अपने शयन कक्ष में चले गए''। पूर्व राष्ट्रपति स्व0 श्री शंकरदयाल शर्मा जी ने ''ज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरिया'' कहकर अपने कार्यकाल की समाप्ति की। पूर्व राष्ट्रपति स्व0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम ने राष्ट्रपति पद की शपथ लेते समय राष्ट्र की एकता और विकास के लिए कबीरदास की प्रसिद्ध साखी को– ''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब'' दोहराते हुए उन्हे याद किया। वर्तमान ओजस्वी, कर्मठ, स्पष्टवादी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपनी उत्तर प्रदेश यात्रा के समय मगहर में संत कबीर अकादमी की स्थापना की और कबीर की प्रसिद्ध उक्ति का उद्वाचन किया–'

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

'पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय'।।

मगहर में भाषण के दौरान माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि, श्रमयोगी, कर्मयोगी, कबीरदास मानवता के लिए एक मिशाल हैं। कहा कि–

''तीरथ गए तो एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरू मिले अनेक फल, कहे कबीर विचार''।।

पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोंविद ने भी संत कबीर साहब महोत्सव (मध्य प्रदेश) में संत कबीरदास को मानवता की एक मिशाल बताया, और कहा कि, बांधवगढ़ से संत कबीरदास के शिष्य धर्मदास ने कबीर पंथ का प्रारम्भ किया था।

वर्तमान वैश्विक युग में तकनीकी विकास को आधुनिकता का पर्याय माना जाता है। वास्तव में विज्ञान ने भौतिक सुख साधनों में अत्याधिक वृद्धि की है तथा इन्ही सुख साधनों को लोग विकास मानने लगे हैं, लेकिन क्या कारण है कि, आज मनुष्य सुख शांति से वंचित है तथा तनावग्रस्त है? आन्तरिक विकास के बिना बाह्य विकास का कोई अर्थ नहीं है। ''प्रभुता को सब कोई भजे, प्रभु को भजे न कोय''। तथा ''लागे स्वाद सर्वान्त को मीठा'' कबीरदास की यह बात आज सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। यह स्वार्थ ही है, जो मनुष्य को नैतिक मूल्यों से अलग कर देता है।[7] साम्प्रदायिकता, हिंसा, हत्या जातिवाद, आतंक, असमानता से ग्रसित समाज के लिए यदि कहीं प्रकाश की रश्मि दृष्टिगोचर होती है तो, वह सिर्फ कबीरदास में ही दिखायी देती है।[8] उपर्युक्त समस्त, दोषों का निवारण तभी किया जा सकता है, जब व्यक्ति का मानसिक परिष्कार किया जाए। मनुष्यों व राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए, कबीरदास के संदेशों की आवश्यकता और बढ़ गयी है। कबीरदास का चिंतन ही स्वार्थ एवं क्षुद्र वासनाओं से उपर उठाकर, मानव को मानव बना कर मानवता की रक्षा कर सकता है। कबीरदास एक ऐसा मानव चाहते हैं, जो भीतर से अध्यात्म से परिपूर्ण हो एवं बाहर से संतोष, दया, करूणा, शील, परोपकार आदि मानवीय गुणों से युक्त हो एवं झूठे पाखण्डों से मुक्त हो। कबीरदास से अधिक समरसता, मानवीय एकता, समता का प्रतिपादन संसार के किसी अन्य महापुरूष ने नहीं किया है।[9]

''शील संतोष सदा समदृष्टि, रहनि गहनि में पूरा।
ताके दरथ परस भय भाजै, होय क्लेश सब पूरा।।[10]

कबीरदास आध्यात्मिक समाजवाद की चिंतन प्रणाली के पहले दृष्टा और संस्थापक महापुरूष है। सामाजिक शोषण, अन्याय, अत्याचार के विरूद्ध कबीरदास की कविता आज भी तीखा अस्त्र है। पं0 सर सुन्दरलाल ने अपनी पुस्तक ''भारत में अंग्रजी राज'' में कबीरदास को हिन्दू मुस्लिम एकता का आदि प्रवर्तक बताया है। साम्प्रदायिक सद्भाव को बनाए रखने के लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों को सत्य के मार्ग पर चलने के लिए कहा है कि–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कहै कबीर मैं हरिगुण गाउँ, हिन्दू तुर्क दोऊ समझाऊँ।
हिन्दू तुर्क का कर्ता एक, ता गति लखी न जाई।।

हिन्दू कहत है राम पियारा, मुसलमान रहिमाना।
आपस में दोऊ लड़े मरत हैं, मर्म न काहू जाना।।11

कबीरदास कहते हैं कि, सभी मनुष्यों को परमात्मा ने बनाया है। न कोई हिन्दू है न कोई मुसलमान, न कोई छोटा है न बड़ा, न कोई उँचा है न नीचा। सभी में उसी का नूर समाहित है–

अल्लाह एकै नूर उपाया, ताकी कैसी निन्दा।
एक नूर से सब जग कीया, कौन भला कौन मन्दा।।[12]

कबीरदास की प्रासंगिकता आज इसलिए नहीं है कि, उन्होने आडम्बरों का विरोध किया, बल्कि वे प्रासंगिक इसलिए हैं कि, उन्होने जीवन मूल्यों की बात की।[13] आचरण की पवित्रता एवं कथनी–करनी की एकता पर, विशेष बल दिया है। कुछ लोग अपने झूठे अहंकार के कारण भेदभाव भी करते हैं–

ऊँचे कुल क्या जनमिया, जे करनी ऊँच न होय।
सुवर्ण कलश सुरा भरा, साधू निन्दै सोय।।[14]

कर्म के प्रति निष्ठा और समग्र मानव जाति के प्रति प्रेम से ही मनुष्य अपना और समस्त समाज का कल्याण कर सकता है। वर्तमान में हमारी कथनी एवं करनी में भेद है[15]–

जैसी मुख से नीकसे, तैसी चले चाल।
पार ब्रम्ह नियरा रहे, पल में करे निहाल।।

कबीरदास की रचना एवं आलोचना दोनों के केन्द्र में मानव ही है। मनुष्य मात्र की एकता और समानता उनके चिन्तन का केन्द्र बिन्दु है। कबीरदास का कहना है कि, यदि समाज में सुधार लाना है तो पहले अपने–आपको सुधार करना होगा।

बुरा जो देखन मैं चला, बुना न मिलिया कोय।
जो दिल खोजो आपना, मुझसे बुरा न कोय।।[16]

कबीरदास मानव की स्वतंत्रता के पक्षधर हैं। वे चाहते हैं कि, मनुष्य अपनी आस्था, विश्वास एवं क्षमता के अनुसार अपना जीवन जिए। ये मानव की स्वतंत्रता को सीमित करने वाली हर बात का विरोध करे हैं, चाहे वह सामाजिक हो या धार्मिक। कबीरदास ने जो व्यंग या आलोचना की, वह किसी की हंसी उड़ाने के लिए नहीं की है, बल्कि भीतर सत्य के प्रति निष्ठा, आत्म–विश्वास, आत्म–गौरव पैदा करने के लिए कहा है। उनकी दृष्टि में समाज का व्यापक हित निहित है–

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढै. सो पंडित होय।।[17]

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीरदास सामाजिक बराबरी के समाज में ही विश्वास नहीं करते, बल्कि उस बराबरी को सामाजिक व्यवहार में भी देखना चाहते हैं। कबीरदास ने इच्छाओं के नियंत्रण पर बल दिया है। माया विभिन्न प्रलोभनों का ही रूप है। अधिक धन–सम्पदा, हिंसा बोध, लोभ, मोह आदि मनुष्य को बार–बार ठगने वाली माया है। कबीरदास ने इसी माया का विरोध किया है, जीवन का कभी विरोध नहीं किया।

माया मुई न मन मुआ, मरि मरि गया शरीर।
आशा तृष्णा न मुई, यो कहि गए कबीर।।[18]

कबीरदास ने आज से छः सौ वर्ष पहले ही पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए हरे पेड़ों को न काटने के लिए कहा था। कबीरदास की दृष्टि में वह ब्रम्हाण्ड का ही एक अभिन्न पक्ष है, परिवेश है। पुष्प, पत्ती, पत्र या पशु, पक्षी, पहाड़ हो या कुआँ, नदी–नद, समुन्द्र हो या पृथ्वी, आकाश, नक्षत्र, सूरज, चाँद हो, कबीरदास के लिए सब ब्रम्हाण्ड चौतन्य इकाई के अंश हैं। कबीरदास ने कहा था कि, हम प्रकृति के साथ मैत्रीपूर्ण जीवन व्यतीत करें। वनस्पतियों में जीवन है। इसे वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु ने सिद्ध कर दिया है, लेकिन कबीरदास ने इसे बहुत पहले ही कह दिया था–

भूली मालिन पाती तोरे, पाती पाती जीव।
जिस पाहन को पाती तोरे, सो पाहन निर्जीव।।[19]

कबीरदास मनुष्य को यन्त्र मानकर टुकड़ों में नहीं देखते हैं। उन्होने मनुष्य और सृष्टि में, पिंड और ब्रम्हाण्ड में, सृष्टि और समष्टि में, मानव और प्रकृति में कोई अलगाव, भेद न मानकर मानवीय गरिमा, समता, समरसत्ता के साथ सम्पूर्ण मानव समाज को उत्थान का मार्ग दिखाया है।

सन्दर्भ–

1. सिंह, डा0 पारसनाथ : *सुरति योग पत्रिका,* अगस्त, सितम्बर 2000, पृ0 7–8
2. श्रोत्रिय, प्रभाकर : *कबीरदास विविध आयाम,* 2002, पृ0 13–14
3. उपर्युक्त : पृ0 07
4. वंशी, डा0 बलदेव : *कबीर की चिंता,* 2002, पृ0 96
5. सिंह, डा0 पारसनाथ : *सुरति योग पत्रिका,* सितम्बर 2000, पृ0 8
6. श्रोत्रिय, प्रभाकर : *कबीरदास विविध आयाम,* 2002, पृ0 6
7. सिंह, डा0 पारसनाथ : *श्री सद्गुरू कबीर धर्मदास साहब वंश परिचय,* 2001, पृ0 9
8. वंशी, डा0 बलदेव : *कबीर की चिंता,* 2002, पृ0 110–111
9. सिंह, डा0 पारसनाथ : *श्री सद्गुरू कबीर धर्मदास साहब वंश परिचय,* 2001, पृ0 3
10. द्विवेदी, हजारी प्रसाद : *कबीर,* दिल्ली, 1973, पृ0 277
11. उपर्युक्त : पद 70 , पृ0 326

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

12. प्रो0 युगेश्वर : *कबीर समग्र (द्वितीय खण्ड),* वाराणसी, 1998 पृ0 547
13. उपर्युक्त : पृ0 487–89
14. उपर्युक्त : पृ0 297
15. उपर्युक्त : पृ0 283
16. उपर्युक्त : पृ0 466
17. उपर्युक्त : पृ0 443
18. उपर्युक्त : पृ0 278
19. उपर्युक्त : पृ0 722